पत्थर के लोग
निकी वेड्स
पत्थर के लोग

निकी वेइस
अर्नी अपनी दादी की गोद में जाकर बैठ गया।
"मुझे एक कहानी सुनाओ, दादी," उसने कहा।
"तुम्हारा मतलब मोमबत्ती बिािे वाले रूबेि की कहानी?" दादी ने पूछा,
"नहीं, नहीं" अर्नी ने कहा, "कोई नई कहानी।"
"घड़ीसाज़ की पत्ती फ़्रीडा और उसकी तीन बेटियों की कहानी?" दादी ने पूछा,
"नहीं दादी," अर्नी ने कहा. "कोई नई कहानी, जिसे आपने पहले कभी नहीं सुनाया हो।"
"ठीक है," दादी ने कहा. फिर उन्होंने एक पल के लिए सोचा और अपनी कहानी शुरू की ....
अच्छा सुनो, एक बार इसहाक नाम का एक फेरीवाला था।

वो एक गरीब विक्रेता था, उसके पास एक ठेला-गाड़ी के अलावा और कुछ नहीं था। एक समय था जब इसहाक के पास एक खच्छर था,

खच्छर बुढापे के कारण मर गया, और इसहाक इतना गरीब था कि वो नया खच्छर खरीद नहीं सका।

इसलिए, वो अपनी ठेला-गाड़ी को एक सुनसान गाँव से दूसरे गाँव तक, मीलों तक धाकलने लगा। एक गाँव से दूसरे गाँव तक, इसहाक धीरे-धीरे और लगातार अपनी गाड़ी को धाकलता था।
इसहाक चुपचाप लोगों के हाथों में चीज़ें चीज़ में बेचते थे और उनके द्वारा दिए गए धन को स्वीकार लेता था। कभी-कभी वो किसी बच्चे को एक छोटी पत्थर का बना आदमी जीत करता था जिसे उसने अपनी यात्रा के माध्यम से बनाया होता था। फिर वो अपनी घर-घर को झूठी करता था अगले गाँव की ओर बढ़ जाता था।

"वो अजीब आदमी है," कसाई ओटो ने कहा।

"वो कभी किसी से कोई बात नहीं करता है," घोड़ा व्यापारी मैक्स ने उससे जोड़ा।

दूधवाले की बेटी तोला ने कहा, "मैदान इलाकों मे इतने सालों की यात्रा ने उसे थोड़ा अजीब बना दिया है।"

जब इसहाक के अंत में किसी गाँव में पहुंचता तो सभी उसे देखकर प्रसन्न होते थे। आखिरकार, उसकी घर-घर में वे सभी सांप-सांप चीजें भरी होती थीं जिनकी उन्हें जरूरत होती थी। लेस और कपड़ा, और धूपदार, कीवर्ण और बजन, दुधवाला, और कुछ वस्त्र नए और अंडरवियर अप इन सभी चीज़ों को इसहाक से खरीद सकते थे।

"क्या तुम्हारे पास मधुमक्खी का मोम है, इसहाक?" बेनी बेकर ने पूछा।

"इसहाक, मुझे एक कॉर्क निकालने वाला स्कू चाहिए?" पनीर बनाने वाले के पत्नी एलिनी ने पूछा।
इसहाक थोड़ा अजीब जस्ता था। इतने वर्षों में उसने लोगों के साथ बहुत कम समय बिताया था और अधिक-से-अधिक समय एक गांव से दूसरे गांव घूमने में बिताया था।

और हमेशा, जैसे ही इसहाक कोई गांव छोड़ता, और आगे जाने पर जब उसे कोई अन्य घर, व्यक्तिया, या जनवर नहीं दिखता तो, इसहाक अपनी ठेला-गाड़ी रोक देता। वो पत्थरों को खोजना शुरू करता - बड़े-छोटे पत्थर, गोल-नुकीले पत्थर।

फिर वो उन पत्थरों को एक ठेर में जमाता था। वो हाथों के लिए दो शाखाएं जोड़ता था। फिर वो अपनी ठेला-गाड़ी से एक पुराना कपड़ा लेकर पत्थरों को एक रिबन बांधता था। इस तरह वो पत्थरों के आदमी बनाता था!
जब इसहाक अपने रास्ते पर आगे बढ़ते समय वो समय-समय पर पीछे मुड़कर देखता था. वहाँ उसका बनाया हुआ पत्थर का आदमी खड़ा होता था. और वो पत्थर का बुत, एक धैर्यवान मित्र की तरह हमेशा इसहाक की प्रतीक्षा करता था. वे इसहाक के दोस्त थे और वे उससे बातें करते थे. हो सकता है कि वो दोस्त जवाब न देते हों, लेकिन वे ऐसे दोस्त थे जो इसहाक के दिल की बातें सुनते जरूर थे.

जैसे-जैसे इसहाक और आगे बढ़ता, तब उसके और पत्थरों के बुतों के बीच की दूरी बढ़ती जाती. तब उसे अपने दोस्तों को देखना और कठिन हो जाता ... और अंत में वे उसकी आंखों से ओझाल हो जाते.

तब इसहाक दुबारा रुकता और फिर कुछ पत्थर इकट्ठे करता.

वो एक के ऊपर एक करके उनको सजाता.

फिर वो उसमें कुछ पत्थर और टहनियां जोड़ता.

और फिर ठेला-गाड़ी से एक पुरानी टोपी निकालकर उन्हें सजाता.

फिर वो मीलों तक उस पत्थर के आदमी से बातें करता.

और इस तरह इसहाक आगे बढ़ता जाता. एक पत्थर के आदमी से लेकर दूसरे पत्थर के आदमी तक. इस तरह इसहाक, एक गाँव से दूसरे गाँव तक, अपनी यात्रा ज़ारी रखता था.
अब, जैसा कि उसके भाग्य में लिखा था, इसहाक ब्रुरिया नाम के गाँव में पहुँचा, क्योंकि तब पासओवर (यहूदी पवत) की छुट्टी आ रही थी।

यहूदी पुजारी की पत्नी एस्क्तेर ने कहा, "इसहाक, मुझे एक बड़ा बर्तन चाहिए।"
"इसहाक, मुझे कुछ काला धागा चाहिए" अबे दर्जी ने अनुरोध किया।

"क्या आपने सुना है कि तिस्कट में क्या हुआ?" मोदके मुरी ने ठेला-गाड़ी के आसपास इकट्ठे लोगों से पूछा।

"क्या?" उन्होंने एक स्वर में पूछा,

"जार के सैनिकों ने आकर उस गाँव में तोड़-फोड़ की और बहुत नुकसान पहुँचाया, "मोदके ने कहा।"अब क्योंकि उन्होंने एक गाँव में तोड़फोड़ की है," अबे ने कहा, "तो वो निश्चित रूप से दूसरे गांवों को नष्ट करने की योजना भी बना रहे होगे।"

इसहाक ने चुपचाप लोगों को वो सब कुछ सौंप जो गांववालों को चाहिए था। उसने एक बच्चे को एक छोटा पत्थर का आदमी भी भेंट किया जिसे उसने अपनी यात्रा में बनाया था। उसके बाद वो अपनी ठेला-गाड़ी लेकर अगले गाँव की ओर चल दिया। ग्रामीण लोग, इसहाक और ठेला-गाड़ी को आंखों से ओझाल होने तक देखते रहे।

"वो कितना अजीब आदमी, "अबे दर्जी ने कहा।

"मेरी राय में वो बहुत शांत है," यहूदी पुजारी की पत्नी ने कहा।

"ऐसा लगता है कि उसे दुनिया में अन्य किसी व्यक्ति की जड़ता ही नहीं है," मोदके मुरी ने कहा। "मैं उसके सामान के अलावा उसपर और अधिक निभाया नहीं होना चाहता हूँ।"
इसहाक अपने रास्ते पर चलता गया. रास्ते में स्कूकर उसने एक पत्थर का आदमी बनाया और फिर से चलना जारी रखा. कुछ समय बाद उसने दूसरा पत्थर का आदमी बनाया.

उसने अपनी यात्रा जारी की.

फिर धीरे-धीरे मैदान के खिलाफ सूर्योदय होने लगा और चारों ओर अंधेरा छा गया.

इसहाक रात के आराम के लिए अपनी ठेला-गाड़ी से बिस्तर उतारने ही वाला था कि उसे आगे एक टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी. उसे कुछ लोगों की आवाजें भी सुनाई दीं. इसहाक ने ठेला-गाड़ी छोड़ी और वो चुपके से देखने के लिए करीब गया.
एक पेड़ के पीछे से उसने सैनिकों के एक समूह को कैम्प-फायर की ध्वंसति आग के आसपास बैठे देखा।

"भोर होते ही हम बुरिया तक सवारी करेंगे, इससे पहले कि लोगों को कुछ जानने का मौका मिले कि क्या हो रहा है," उसने किसी को कहते हुए सुना।

"हम तपास तक गांव पर आक्रमण करेंगे!" वहां से खिसकने से पहले इस्तेमाल ने यह आखिरी बात सुनी।
केवल चन्द्रमा के प्रकाश ने ही इसहाक का मार्ग प्रकाशित किया।
वो ठेला-गाड़ी के पीछे-पीछे उड़ रहा था. उसने उसी दिन बनाए पत्थर
के आदमियों को अपने पीछे छोड़ा. जब इसहाक अंत में बुरिया
पहुंचा, तो किसी भी खिड़की में प्रकाश नहीं चमक रहा था. कोई ने कि
आत्मा नहीं जागी थी. पासांवर पर्व के कुछ ही दिन बाकी थे.
इसलिए गाँव में हर कोई सफाई, खाना पकाने, मरम्मत करने, सर्दियों
के कपड़े उठाकर रखने और छुट्टी के व्यंजन बनाने से थक गया था.
इसहाक ने भागकर पहले दरवाजे को खटखटाया. पर वहाँ किसी ने कोई जवाब
नहीं दिया. वो बगल में दौड़ा. लेकिन वहाँ भी उसे कोई आवाज
शुनाई नहीं दी.
इसहाक के पास बर्बाद करने का समय नहीं था इसलिए वो फिर
से दौड़ा.
अभी भी अंधेरा था लेकिन मोदके मुंही जाग गया था।
"मुझे घोड़ों की चाप सुनाई दे रही हैं!" मोदके ने अपनी पत्नी से कहा। जब वो बिस्तर से कूदा तो निश्चित रूप से, उसके पैरों के नीचे की धरती हल्के-हल्के कांप रही थी।

मोदके घर से बाहर निकला और गली में भागा और चिल्लाया, "उठो, सब लोग! रूसी जार (राजा) के सैनिक आ रहे हैं!"

कुछ ही समय में सभी लोग जाग गए और गाँव में इधर-उधर भागने लगे। "हम क्या करें?" वे चिल्लाएँ।

लेकिन कुछ करने के लिए समय नहीं था। भागने या कोई रक्षा योजना बनाने का समय नहीं था। अनाज के सोंदागर शमीन ने कहा, "उन्होंने ठीक समय हमले की सोची, ताकि वे भोर के उजाले का फायदा उठा सकें।" अब उनके गाँव को घेरने वाली पहाड़ियों के किनारों पर एक नारांगी चमक दिखाई दे रही थी।
खुरों की चापें अब तेज होती जा रही थीं, और गाींववा ले बढ रही रोशिी में घुड़सवार सैनिकों के आिे की गनत का अींदा जा लगा रहे थे।

"इस गाींव को अब कोई भूत देखा होगा," बेकर ने कहा। "या भगवान के दूत को," यहूदी पादरी ने कहा।

बेड तभी सुबह की रोशनी की एक धुंधली किरण आई, और सूरज पहाडियों पर हलके से झूमने लगा। अधीन, ग्रामीणों ने विस्फोट में देखा, सैनिकों ने अपनी लगाम खींची और अपने घोड़ों को रोक दिया। कुछ देर अब और अन्यवस्था ज़रूर रही। घोड़े अलग-अलग दिशाओं में दौड़े। कुछ देर बाद सभी घुड़सवारों और सरफर दौड़ते हुए दूर चले गए।

उन्होंने जो देखा, उस पर ग्रामीणों को बिन्दुक विश्वास नहीं हुआ। "आपको लगता है कि क्या उन्होंने कोई भूत देखा होगा," बेनी बेकर ने कहा। "या भगवान के दूत को," यहूदी पादरी ने कहा।
"जरा देखो!" अबे दर्जी चिल्लाया, और फिर सभी ने उसकी उंगली की सीध में देखा।

वहाँ उनके चारों ओर की पहाड़ियों की चोटियों पर पत्थर के बिंदुओं आदमियों की एक कतार खड़ी थी। मंद रोशनी में ऐसा लग रहा था जैसे छोटे से गाँव की रक्षा करने के लिए वहाँ कोई सेना तैनात हो।
"अर्नी देखो, यह कहानी इस बारे में है कि इसहाक ने बुरिया गांव को कैसे बचाया," दादी ने कहा।

"क्या सच में ऐसा हुआ था दादी?" अर्नी ने पूछा।

दादी किताबें की अलमारी के पास गईं। उन्होंने शेल्फ से कुछ उठाया और उसे अर्नी को दिया。

"देखो!" दादी ने कहा। "पत्थर का बना आदमी"

"ठीक वैसा ही पत्थर का आदमी जिसे इसहाक कहानी में, गांव के बच्चे को भेंट करता था!" अर्नी ने कहा।

"वहीं," दादी ने कहा।

"तो आप ही वो बच्ची थीं?" अर्नी ने पूछा।

"मैंने वो सब कुछ अपनी ओँखों से देखा था," दादी ने उत्तर दिया।

"तेजस बाद में इसहाक का क्या हुआ?" अर्नी ने पूछा.
खैर, जब लोगों को पता चला कि इसहाक ने क्या किया था, तो इसहाक का बड़ा सम्मान हुआ. वो पासओवर परव वाले दिन यहूदी पुजारी की मेज पर एक सम्मानित अनुदान बना. छुटकी के पूरे सप्ताह भर इसहाक का लोगों ने किसी राजा की तरह सत्कार किया.
और जब आगे जाकर बुरिया उसकी आँखों से ओझाल हो गया तो
इसहाक ने अपनी ठेला-गाड़ी रोकी। उसने कुछ पत्थर उठाए — कुछ छोटे,
कुछ बड़े। उसने उन्हें एक-दूसरे पर टिकाया और सजाया। फिर उसने अपनी
ठेला-गाड़ी से एक पुराना दस्ताना निकालकर उसे पत्थर के बुत में जोड़ा।
और फिर इसहाक अपने पत्थर के मित्र से बात करता हुए आगे बढ़ता रहा
जब तक वो पत्थर का आदमी उसकी आँखों से ओझाल नहीं हो गया.

समाप्त